



बढ़ते कदम

वर्ष-15
अंक-08
2016

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



भारत के संविधान में राजभाषा

9. अखिल भारतीय सेवाओं और उत्तर केन्द्रीय सेवाओं में भर्ती

(क) परीक्षा का माध्यम - समिति की राय है कि

क) परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी बना रहे और कुछ समय पश्चात् हिन्दी वैकल्पिक माध्यम के रूप में अपना ली जाए। उसके बाद जब तक आवश्यक हो अंग्रेजी और हिन्दी दोनों ही परीक्षार्थी के विकल्पानुसार परीक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने की छूट हो; और

ख) किसी प्रकार की नियत कोटा प्रणाली अपनाए बिना परीक्षा के माध्यम के रूप में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग शुरू करने की व्यवहार्यता की जांच करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति नियुक्त की जाए।

कुछ समय के पश्चात् वैकल्पिक माध्यम के रूप में हिन्दी का प्रयोग शुरू करने के लिए संघ लोक सेवा आयोग के साथ परामर्श कर गृह मंत्रालय आवश्यक कार्रवाई करे। वैकल्पिक माध्यम के रूप में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग करने से गम्भीर कठिनाइयां पैदा होने की संभावना है, इसलिए वैकल्पिक माध्यम के रूप में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग शुरू करने की व्यवहार्यता की जांच करने के लिए विशेषज्ञ समिति नियुक्त करना आवश्यक नहीं है।

(ख) भाषा विषयक प्रश्न-पत्र -

समिति की राय है कि सम्यक सूचना के बाद समान स्तर के दो अनिवार्य प्रश्न-पत्र होने चाहिए जिनमें से एक हिन्दी और दूसरा हिन्दी से भिन्न किसी भारतीय भाषा का होना चाहिए और परीक्षार्थी को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह इनमें से किसी एक को चुन ले।

अभी केवल एक ऐच्छिक हिन्दी परीक्षा पत्र शुरू किया जाए। प्रतियोगिता के फल पर चुने गए जो परीक्षार्थी इस परीक्षा पत्र में उत्तीर्ण हो गए हों, उन्हें भर्ती के बाद जो विभागीय हिन्दी परीक्षा देनी होती है उसमें बैठने और उसमें उत्तीर्ण होने की शर्त से छूट दी जाए।

10. अंक - जैसा कि समिति का सुझाव है केन्द्रीय मंत्रालयों का हिन्दी प्रकाशनों में अन्तर्राष्ट्रीय अंकों के अतिरिक्त देवनागरी अंकों के प्रयोग के सम्बन्ध में एक आधारभूत नीति अपनाई जाए, जिसका निर्धारण इस आधार पर किया जाए कि वे प्रकाशन किस प्रकार की जनता के लिए हैं और उसकी विषयवस्तु क्या है। वैज्ञानिक, औद्योगिक और सांख्यिकीय प्रकाशनों में जिसमें केन्द्रीय सरकार का बजट साहित्य भी शामिल है, बराबर अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का प्रयोग किया जाए।

11. अधिनियमों, विधेयकों इत्यादि की भाषा--

(क) समिति ने राय दी है कि संसदीय विधियां अंग्रेजी में बनती रहें किन्तु उनका प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराया जाए। संसदीय विधियां अंग्रेजी में तो रहें पर उसके प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद की व्यवस्था करने के वास्ते विधि मंत्रालय आवश्यक विधेयक उचित समय पर पेश करे। संसदीय विधियों का प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद कराने का प्रबन्ध भी विधि मंत्रालय करे।

(ख) समिति ने राय जाहिर की है जहां कहीं राज्य विधान मण्डल में पेश किए गए विधेयकों या पास किए गए अधिनियमों का मूल पाठ हिन्दी में से भिन्न किसी भाषा में है, वहां अनुच्छेद 348 के खण्ड (3) के अनुसार अंग्रेजी अनुवाद के अलावा उसका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया जाए।

राज्य की राजभाषा में पाठ के साथ-साथ राज्य विधेयकों, अधिनियमों और अन्य सांविधिक लिखतों के हिन्दी अनुवाद के प्रकाशन के लिए आवश्यक विधेयक उचित समय पर पेश किया जाए।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—

—रामाशीष सिंह— 3

पाप का भोग—

— कामेश्वर पाण्डेय 4

सुख की खोज—

— सच्चिदानंद 6

कुंडली चक्र—

— अरुण कुमार झा 8

रामबाण गिलोय

— सुप्रिया राय 9

त्याग एक बच्ची का

— प्रियंका पाण्डेय 10

मेघालय का शिलांग

— ऋचा सिंह 14

मोबाइल और प्रोसेसर

— विकास कुमार 15

कोलकाता हाथ रिकसा

— इंद्र ज्योति राय 17

जल वृक्ष—

— विनय कुमार झा 18

चित्र वीथिका 19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय

पूर्व रेलवे/मालदा

फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – Rajbhasha.malda@gmail.com

Web: www.er.indianrailway.gov.in

महामना मालवीय

हमारे देश में समय-समय पर अनेक विद्वान पैदा होते रहे हैं। इन विद्वानों ने ज्ञान के विविध क्षेत्रों में अनेक कार्य किये। सामाजिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक मनीषियों ने अमूल्य योगदान दिया है। ऐसे ही शिक्षाविदों में पंडित मदनमोहन मालवीय का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। वे भारत के पहले और अन्तिम व्यक्ति थे जिन्हें महामना की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया।

पंडित मदनमोहन मालवीय का जन्म 26 दिसम्बर 1861 को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता बृजनाथ मालवीय ने इनकी प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था 'धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला' में करायी। इसके बाद इन्हें 'विद्धाधर्म प्रवाधिनी' में प्रवेश दिलाया गया। पंडित मदनमोहन मालवीय अत्यंत मेधावी छात्र थे। अतः इन्हें शिक्षकों का भरपूर स्नेह मिला। इसी विद्यालय के शिक्षक देवकीनंदन जी ने मालवीय के व्यक्तित्व को निखारने में प्रमुख भूमिका निभाई। इन्हीं के प्रेरणा से वे एक कुशल वक्ता बने।

पंडित मदनमोहन मालवीय जी के घर की आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। इनके पिता बड़ी कठिनाई से इन्हें स्नातक तक शिक्षा दिला पाए। घर की दशा को देखते हुए मालवीय जी ने सरकारी हाईस्कूल में शिक्षक के पद पर कार्य करना आरम्भ कर दिया। अपनी अदभुत वक्तृता व शिक्षण शैली के कारण वे अच्छे व लोकप्रिय शिक्षक के रूप में विख्यात हो गए।

मालवीय जी देश से निरक्षरता को दूर करने और शिक्षा के व्यापक प्रसार को देश की उन्नति के लिए आधारशिला मानते थे। अतः उन्होंने शिक्षा पर विशेष बल दिया। वे स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। शिक्षा सम्बन्धी अपनी धारणा को साकार करने के लिए उन्होंने एक महान विश्वविद्यालय की स्थापना की योजना बनायीं। इसके लिए उन्होंने देशवासियों से धन माँगा। अपनी सामर्थ्य के अनुसार लोगों ने इस पुण्य कार्य में सहयोग किया।

तत्कालीन काशी नरेश ने विश्वविद्यालय के लिए पर्याप्त धन और भूमि दी। सन 1918 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। वे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि बिना हिन्दी ज्ञान के देश की उन्नति संभव नहीं है। भारत सरकार ने 24 दिसम्बर 2014 को उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया।

— रामाशीष सिंह

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक

मोहित सिन्हा
मंडल रेल प्रबंधक

परामर्श

विजय कुमार साहू
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक

रामाशीष सिंह
राजभाषा अधिकारी(प्रा.)

संपादक

सच्चिदानंद
व. अनुवादक

कार्यकारी संपादक

इंद्र ज्योति राय
क. अनुवादक

सहयोग

दयामय दास
कनिष्ठ इंजीनियर

पाप का भोग

आज तक ऐसी कोई वैज्ञानिक पद्धति नहीं निकली है जो पाप और पुण्य की विभाजन रेखा प्रकल्पित कर सके। आचार व्यवहार और धार्मिक मान्यताओं को आधार मानकर हम पाप और पुण्य को रेखांकित करते हैं और ऐसी ही परंपरा सदियों से चलती आ रही है इसमें भी कई भ्रांतियां हैं जहां आदमी अच्छा और बुरा को विभाजित करने में अपने को अक्षम पाता है तब ऐसे संकट की स्थिति में आम आदमी मानवीय संवेदनाओं और नैतिकता का सहारा लेता है।

हमारी धार्मिक मान्यता है कि वेद के रचयिता महर्षि व्यास से तत्कालीन मनीषियों ने पाप और पुण्य को जब परिभाषित करने को कहा तो वे कुछ देर चिंतन के पश्चात जो कहे वह निम्नवत है

अष्टादश पुराणेषु

व्यासस्य वचनम् द्वय

पुन्यात् परोपकाराय

पापाय परपीडनम्

लेकिन कर्म के आधार पर किसी पर परोपकार और अन्याय कहा जाए यह भी बड़ी जटिल समस्या है जो संदर्भ के अनुसार परिभाषित होता है और तर्क की कसौटी पर न्याय का मामला बनता है जिसके लिए दंड संहिता बनी है। लेकिन यहां भी विरोधाभास है क्योंकि दंड प्रक्रिया का आधार भी हमारी मानवीय संवेदना एवं मान्यताएं हैं। चरित्र के हम उन्हीं मान्यताओं को आधार मानकर पाप पर पुण्य के फलों पर विचार करें जिससे समाज में अन्याय का विरोध हो और लोग पाप से डरे।

हमारी सामाजिक मान्यता है कि हर मनुष्य को अपने किए हुए पापों और दुष्कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है चाहे देर हो या सवेर। ऐसे उदाहरणों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है जिसमें इस बात का प्रमाण है कि पापी अवश्य दंडित होता है। कई लोगों की इस मामले में यह भी मान्यता है कि यह धरती जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों ही है। यहां कर्मों का फल भोग कर ही मनुष्य विदा होता है। ऐसी भी मान्यता है कि अगर वह व्यक्ति इस जन्म में कर्मफल नहीं भोग पाता है तो उसका पुनर्जन्म होता है और कर्म के अनुसार वह फल भोगता है। तभी तो एक राजा रंक हो जाता है और रंक राजा। चूंकि हम उसके कर्मों के बारे में नहीं जानते इसलिए किसी पापी को सुखी देखकर भगवान को कोसते हैं कि ईश्वर का न्याय सही नहीं है। जिस प्रकार हम बैंकों में पैसा जमा करते हैं तो उसका सारा लेखा जोखा बैंक रखता है ठीक उसी प्रकार हमारे कर्मों का पूरा लेखा जोखा ईश्वर रखता है और आय व्यय के मुताबिक हमें डंड या पुरस्कार भी देता है।

कभी-कभी हम समाज में कुछ विकलांगों या अपंग एवं भिखारियों को देखकर दयावान हो जाते हैं और भगवान को कोसने लगते हैं कि हाय भगवान यह तुम्हारा कैसा न्याय है कि एक आदमी चांदी के चम्मच से नाश्ता करता है और वहीं एक आदमी को रोटी के लिए तरसना पड़ता है। ऐसी असमानता क्यों? ऐसा इसलिए कि हम नहीं जानते हैं कि कौन किस जन्म का फल भोग रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि कई ऐसे राजे-रजवाड़े हुए हैं जिन्होंने अपनी प्रजा पर इतने जुल्म ढाए कि जिनका हिसाब ही नहीं है। मुगलों का शासन ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। इस्लाम के प्रचार एवं प्रभाव को पुष्पित एवं पल्लवित करने के लिए औरंगजेब ने गुरु तेग बहादुर के सर को कलम करवा दिया था और अपनी

अधीनता स्वीकार करने हेतु गुरु गोविंद सिंह के दोनों बेटों को जिंदा दीवार में चुनवा दिया था। और तो और औरतों के छोटे छोटे बच्चों के शरीर के टुकड़े टुकड़े करके इन को माला बनवाकर उनकी माताओं को पहनने के लिए भेज देता था। इतना बड़ा पाप या अत्याचार ईश्वर से किस प्रकार सहा गया मैं नहीं कह सकता हूँ लेकिन इतना अवश्य कह सकता हूँ कि ऐसे ही पापियों का पुनर्जन्म दुख भोगने के लिए होता है और वह दया के पात्र जैसे दिखते हैं। केवल मुगलों को ही क्यों कहा जाए इतिहास इस बात का साक्षी है कि पुराने राजा महाराजाओं ने भी ऐसा ही अत्याचार किया है। हो सकता है कि वह भी इस में शामिल है। आज भी पाप का तांडव और गंगा नृत्य कायम है अंतर इतना ही है कि तब राजे-रजवाड़े ऐसा करते थे और अब ऐसी यातनाएं समाज में आम लोगों के द्वारा दी जाती हैं तभी तो बेटी और बहू को जिंदा जलाया जा रहा है।

इस सशक्त मीडिया के युग में कुछ उदाहरण हमें प्राप्त होते हैं और कुछ नहीं भी प्राप्त होते हैं। सक्षम व्यक्तियों द्वारा एक पाप करके न्याय को खरीद लिया जाता है। पीड़ित सुबक-सुबक कर रह जाते हैं या बरसों न्याय का इंतजार करते हैं। जिसमें कुछ को न्याय मिलता है और कुछ को न्याय की प्रतीक्षा में पूरा जीवन ही बीता देना पड़ता है। लेकिन इसे हतोत्साहित होने की आवश्यकता नहीं है भले ही वह व्यक्ति सामाजिक न्याय या कानूनी न्याय से बच जाए लेकिन ईश्वर के न्याय से नहीं बच सकता ऐसा मेरा विश्वास है। गीता भी इसका समर्थन करती है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि जीव भले ही इस जन्म में अपने कर्मों का फल भोगने से बच जाए लेकिन उसे वे फल भोगने ही पड़ेंगे जन्म चाहे दूसरा ही क्यों न हो।

इस पर आज सक्षम व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार पाप पर पर्दा तो डाल लेता है लेकिन उसके अंदर एक तीसरी शक्ति व्याप्त है जो हर पल और हर तरफ निगरानी रखती है। जिस प्रकार आदमी की फोटोग्राफी अपनी कील पर घूमकर सही नक्शे के बिंदुओं को रेखांकित निष्पक्ष रूप से करती है ठीक उसी प्रकार अंतर्मन रुपी ग्राम-ओ-ग्राफी निष्पक्ष काम करती है और कर्मों का प्रारूप तैयार होता रहता है। उसी के अनुरूप हमें फलाफल भी प्राप्त होता है। आप भले ही हमारे इस सिद्धांत में विश्वास करें या न करें सहमत हो या ना हो। क्योंकि हर आदमी के सोचने का दृष्टिकोण अलग अलग होता है। मुझे इस बात पर नाराजगी भी नहीं है क्योंकि जीवन की जिस पहलू को मैंने उजागर करने का करने की चेष्टा की है हो सकता है आप इसे कुछ इतर हों। लेकिन मेरा यह दावा है कि हमारे लक्ष्य एक ही है भले ही रास्ते अलग अलग।

मैं एक और बात को स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि ऐसी बातें करके हम आपके कार्यों या परियोजनाओं को बाधित करना नहीं चाहते और ना आपको धर्म भीरू बनाने की हमारी इच्छा है आप अपने सारे कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं, किसी की हिम्मत नहीं है कि आप को रोक सके।

मैंने तो वही लिखा है जिसे हमारी जिंदगी ने दिखाया है और अब तक के अनुभव से हम जिस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं। उन्हें सिर्फ आपसे शेयर करना चाहता हूँ मेरी यह भी मंशा नहीं है कि आप इसके अनुगामी बने लेकिन इतना अवश्य है कि मेरे अनुभव विचारणीय अवश्य हैं। इन पर विचार करने से आपको लाभ ही होगा और अगर नहीं तो आप फायदे में रहें हमारे लिए यह अच्छा ही है।

मैं कोई समाज सुधारक भी नहीं हूँ जो लिखकर अपना नाम इतिहास में दर्ज करना चाहता हूँ। मैं भी आप ही के बीच का एक आम आदमी हूँ और आप ही के समान मुझे भी मानवीय कमजोरियां व्याप्त हैं। मुझे भी क्रोध आता है और मैं भी लालची हूँ। मुझसे भी जाने न जाने किसी को पीड़ा हो जाती है। लेकिन इतना अवश्य है कि मेरी पूर्ण कोशिश यही रहती है कि इस पर मेरा नियंत्रण रहे और मैं अन्याय से डरू नहीं। यदि ऐसा नहीं होगा तो हमें भी कहीं न कहीं हिसाब देना ही पड़ेगा।

-- कामेश्वर पांडे

सुख की खोज

सुख की खोज में भटकते मानव की औसत आयु 40- 75 वर्षों की रह गई है। 75 वर्षों की लंबी अवधि में मैं जब सुख की खोज करता हूं तो मुझे सुख के 4 वर्ष से अधिक नहीं दिखाई पड़ते हैं। जब बच्चा जन्म लेता है तो उसे दुख की कोई अनुभूति नहीं होती है तथा बच्चा 2 साल तक अबोध ही रहता है। उसे हर वक्त माता पिता के सहारे की आवश्यकता पड़ती है तथा 3 वर्ष की आयु पार होते होते आजकल के हार्डटेक माता पिता बच्चे को स्कूल में डाल देते हैं और उस के ऊपर अत्याचार की शुरुआत होती है। अभी ठीक से चलना बोलना भी सीख नहीं पाया है कि सुबह माताजी 5:00 बजे जगा देती हैं जबरदस्ती पैखाना भेजती है, ब्रश करा देती हैं तथा स्नान कराकर स्कूल ड्रेस पहना कर गले में स्कूल का टाइम तथा परिचय पत्र और पीठ पर पुस्तकों की बैग मां लिए विद्यालय छोड़ने जाती है।

यदि विद्यालय दूर हो तो बस से रिकशा से या अन्य वाहनों से बच्चे स्कूल जाते हैं तथा वापस आते हैं इस प्रकार 3 वर्ष की आयु से लगभग 20-25 वर्षों तक बच्चे अध्ययन करते हैं तथा बहुत टेंशन में रहते हैं। पढ़ने के बाद नौकरी चाकरी की चिंता होती है तथा इसके लिए भागम भाग इसके लिए भागम भाग दौड़ धूप शुरू होती है तथा अपनी योग्यता अनुसार कोई डॉक्टर बनते हैं तो कोई इंजीनियर तो कोई किरानी तथा 90% छात्र विभिन्न छोटे-छोटे कार्य में लग जाते हैं फिर शुरू होती है जीवनसंगिनी की खोज माता पिता अपने पुत्र के लिए अच्छी कन्या की खोज करते हैं तथा उनका हाथ पीला कर निश्चित हो जाते हैं।

इस 25 वर्ष की आयु में जिस सुख की कामना मनुष्य करते हैं नहीं मिला। कभी स्कूल परीक्षा की टेंशन कभी अच्छे रिजल्ट की चिंता कभी विद्यालय अच्छे विद्यालय कॉलेज में दाखिला लेने की चिंता परेशान करती रहती हैं फिर मन पसंद नौकरी चक्र की चिंता और बाद में सुशील कन्या, चांद सी गुड़िया को जीवनसाथी बनाने की जिंदा।

शादी हुए मुश्किल से वर्ष 2 वर्ष सुख का अनुभव हुआ वह भी यदि पत्नी साथ रहे तो अन्यथा पत्नी घर पर या मायके में या नौकरी अन्यत्र करती हो तो यह भी सुख नसीब नहीं और तो और अगर बीवी भी नौकरी चाकरी में हो और अलग रहती हो तो मौत के समान दुख होता है एक 2 वर्ष की अल्प सूची में ही एक तुम्हारे जैसा ही कान्हा हुंकार मारने लगता है अर्थात् अब आप माता-पिता बनने वाले हो जाते हैं और सारी खुशियां जो घास पर पड़ी ओस की बूंद जैसी गायब हो जाती हैं।

कभी बीवी के कभी बीवी को कभी बीवी को डॉक्टर के पास ले जाने की चिंता तो कभी उनके प्रसव को लेकर परेशानी तथा देखते ही देखते बन गए आप बाप और मां हो गई आपकी छुट्टी बस कोल्हू के बैल की भांति आप लगे रहिए बच्चे की सेवा में डाक्टरों के पीछे रहना तथा तथा फिर वही खेल जो तुम्हारे मम्मी पापा ने तुम्हारे लिए किया अर्थात् स्कूल में भर्ती कराना स्कूल पहुंचाना और लाना कहां सुख मिला बच्चे की पढ़ाई लिखाई से लेकर हाथ पीले करने की चिंता लगी ही रहती है

बच्चे यदि नौकरी पाकर शहरों में रहते हो तो तथा बेटियां पराई घर जा चुकी हो तो बुरा बुढ़िया अकेले रहने पर मजबूर होते हैं और सास 65 वर्ष की आयु होते होते तमाम बिवाइयां ढेर लेती है फिर उसे फिर परेशानी और यदि बदकिस्मती से बुड़ा बुड़ी में कोई एक टर्न बोल गया तो और आफत तब तो जीने का मजा ही खत्म हो जाता है जवानी में

लंबी आयु की कामना करने वाले नौजवान बुढ़ापा आते आते जल्दी उठा लेने की प्रार्थना परमात्मा से करने लगते हैं आखिर क्यों उन्हें जीवन में सुख ढूंढने पर भी कहीं नहीं मिलती है।

उन्हें जन्म से बुढ़ापे तक दुख ही दुख नजर आता है सबसे बड़ा दुख जब मन उसका हाथ पैर कार्य करना बंद कर देता है उसे चलने बोलने के लिए किसी के सहारे की आवश्यकता पड़ती है उसे इस जिल्लत भरी जिंदगी से बहुत अच्छा लगता है रोज बहुत बेटी की ताने से मर जाना उसे पसंद होता है तथा बहुत से बूढ़े किसी अवसाद की स्थिति में आत्महत्या कर लेते हैं इसीलिए कहा गया है अपना हाथ जगन्नाथ जिंदगी का मजा तभी तक है जब आप स्वयं चल फिर सकते हो तब तक आपके पास तथा आपके पास तथा आपके पास जीवन जीने के लिए पर्याप्त धन हो अन्यथा रोगी बनकर खाट पर पड़े पड़े जीने से लाख गुना अच्छा है मर जाना।

इसीलिए विद्वानों ने सुख की तुलना तार के पेड़ की इच्छा से करते हैं क्योंकि जीवन में सच्चा सुख है ही नहीं तभी तो कबीर दास जी ने कहा है झूठे सुख को सुख कहे मानव है मन मोद खलक चबेना काल का कुछ मुंह में कुछ गोद अर्थात् अर्थात् पूरा ब्रह्मांड ही काल के गाल में है और बारी-बारी से सभी उस काल का भोजन हम सब पुराने बनते हैं किसी की नौकरी हुई तो सुख किसी को कुछ हुआ तो खुश कोई परीक्षा पास कर गया तो खुश परंतु यह अस्थायी खुशी है 2 दिनों के लिए क्योंकि इसके बाद फिर संघर्ष की शुरुआत हो जाती है और उसी को पूरा करते-करते बुढ़ापा कब आ जाती है पता ही नहीं चलता है।

अतः मेरे हिसाब से यदि सुखी गिनती की जाए तो शादी से जब तक पत्नी गर्भवती ना हो जाती है उस अवधि को सुख की गिनती की जा सकती है कुछ लोग बच्चा जन्म लेने से स्कूल भर्ती होने के पहले की अवधि को भी शुभ मानते हैं परंतु इसे सुख नहीं कहा जाएगा क्योंकि बच्चा को उस उम्र में दुख सुख का ज्ञान नहीं होता अतः इसे सुख कहना उचित नहीं है क्योंकि इस उम्र में भी इस उम्र में बच्चे को सुख दुख का ज्ञान नहीं होता है अतः इसे सुख कहना उचित नहीं है नौकरी चाकरी या व्यवसाय में सेट हो जाने के बाद से शादी बिया तक की उस सभी को सुख माना जा सकता है जब तक पत्नी गर्भधारणा कर जाती हो अर्थात् पूरी जिंदगी में अधिक से अधिक सुख 2 वर्ष मिलता है।

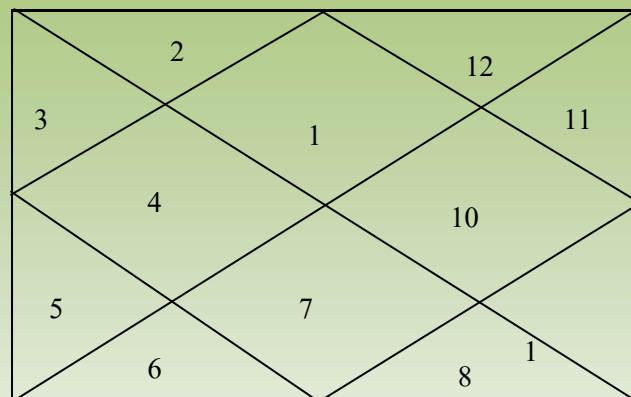
कुछ लोग धन को सुख मांगते हैं कुछ लोग स्वास्थ्य को तो कुछ लोग पूरा भरा पूरा परिवार को अतः सुख की परिभाषा हर व्यक्ति के लिए अलग अलग है धन है परंतु कोई पुत्र औलाद नहीं तो क्या आप सुखी हैं पूरा भरा परिवार है परंतु खाने को मोहताज हो तो क्या आप उसे सुख मारेंगे सब कुछ है परिवार है परंतु खाने को मोहताज है बाल-बच्चा धन दौलत पर जंतु आप रोगी हैं अपंग है तो क्या आप सुख का अनुभव करेंगे आकर निष्कर्ष यही है कि हर व्यक्ति राजा एवं फकीर सभी को कुछ न कुछ परेशानी है।

इस मृत्यु लोक में सच्चा सुखी कोई नहीं है बस सुख स्वता मन की अनुभूति है जो इस कला को जानते हैं वह अभाव में भी सुख का अनुभव करते हैं और जिसे इस कला का ज्ञान नहीं हो उसे स्वर्ग का खजाना भी दे दिया जाए तो उसकी इच्छा की पूर्ति नहीं होगी और वह मृगतृष्णा की भौतिक सुख से दूसरे सुख के पीछे भागते भागते मर जाएंगे परंतु एक विश्व का उपयोग नहीं कर पाएंगे जितना प्रभु जी ने दिया है उसी से संतुष्ट होकर बाल बच्चों के साथ सुख होगा इसीलिए तो कहा गया है संतोषम परम सुखम सचमुच सुखी वही है जिसे संतोष है लोग नहीं है वही सुख का अनुभव कर सकेगा एक्टिव सुख की खातिर त्याग करना परम आवश्यक है हकत्याग लव करता किसी के धन को हड़पने का त्याग करना होगा तभी आपको सुख की अनुभूति होगी अन्यथा आप जीवन भर भटकते रह जाएंगे।

—सच्चिदानंद जिज्ञासु

कुंडली चक्र

पिछले अंकों में आपने ज्योतिष शास्त्र के आविर्भाव की सिलसिलेवार विवेचना पढ़ी। अब हम कुंडली शास्त्र के निर्माण एवं अध्ययन की प्रक्रिया में कुंडली के आगे की भावों की विवेचना चतुर्थ भाव से द्वादश भाव तक पढ़ेंगे।



चतुर्थ भाव- इस भाव से घरेलू जीवन, सुख-शांति, अंतःकरण की स्थिति, उदारता, मनोरंजन, बंधु-बंधव, माता, वाहन, यान, मकान, जायदाद, छल-कपट के साथ-साथ उदर, यकृत, गर्दन आदि के रोगों का अध्ययन किया जाता है। कर्क, मीन एवं मकर राशि इस भाव में प्रबल होते हैं।

पंचम भाव- इस स्थान से विद्या, कार्य प्रवीणता, बुद्धि, प्रबंध-दक्षता, नीति, विनय, देशभक्ति, नम्रता आदि के साथ-साथ धन प्राप्ति, लॉटरी, जुआ, जठराग्नि आदि की जानकारी प्राप्त होती है।

षष्ठम भाव- इस भाव से भय, झगड़े, परतंत्रता के साथ-साथ मुकदमें, क्षति, चिंता, रोग, दुःख, बीमारी, कर्ज, गलतफहमी आदि के साथ-साथ मामा एवं ननिहाल, गुदास्थान की बीमारी का भी अध्ययन इस भाव से होता है।

सप्तम भाव- यह स्थान काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस स्थान से हमें जीवनसाथी के बारे में जानकारी प्राप्त होती है एवं उसके साथ साथ प्रेम संबंध, विवाह, भोग विलास, स्त्री का रूपरंग, शील, मदन-पीड़ा, स्त्री का शील और चरित्र के साथ साथ तलाक, पति पत्नी में अनबन तथा इस भाव से व्यापारिक सहयोगी कूटनीतिज्ञता आदि की जानकारी प्राप्त होती है। इस भाव से हमें बवासीर की भी जानकारी प्राप्त होती है। इस भाव में वृश्चिक राशि काफी प्रबल मानी जाती है।

अष्टम भाव - इस भाव से आयु की गणना, मृत्यु, पूर्व जन्म, मृत्यु के पश्चात की स्थिति, अपमृत्यु के साथ साथ मानसिक व्यथा, निम्नता, पतन तथा यौन रोगों की जानकारी प्राप्त होती है। यह भाव पूर्व संचित द्रव्य, आकस्मिक धन प्राप्ति आदि की भी जानकारी देता है।

नवम भाव - इस स्थान को भाग्य का स्थान कहा जाता है। इस भाव से भाग्योन्नति, ऐश्वर्य, यश, नेतृत्व क्षमता एवं मानसिक प्रवृत्ति की जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही धर्मपरायणता, धार्मिक कट्टरता, ईश्वर प्राप्ति, पुण्य, दान पुण्य, के साथ-साथ वाहन यात्रा, विदेश गमन, पितृ सुख, पोते पड़पोते आदि वंशजों की भी विवेचना होती है। इस भाव में सूर्य एवं ब्रह्मस्पति प्रबल कारक माने जाते हैं।

दशम भाव - इस भाव से राजसुख, नौकरी, सेवावृत्ति, अधिकार, राजकीय अथवा अर्द्धराजकीय सेवा, ऐश्वर्य, भोग तथा विदेश यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है। साथ ही साथ पितृसुख, पितृ द्रव्य, कर्म, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान एवं जातक की जीवन पद्धति की विवेचना की जाती है। मेष, वृष एवं सिंह राशियां इस भाव में प्रबल मानी जाती हैं।

एकादश भाव - इस भाव से लाभ, गुप्तधन, राजद्रव्य, आभूषण, वस्त्र, अश्व, हाथी, मोटर, वायूयान आदि वाहन सुख तथा व्यापारवृत्ति आदि की जानकारी के साथ साथ भ्रातृसुख एवं सामाजिक प्रतिष्ठा की जानकारी प्राप्त की जाती है।

द्वादश भाव - इसे अंतिम भाव माना जाता है। इस भाव से हानि, व्यय, व्यसन, आकस्मिक खर्च, शत्रु, विरोध, फिजूलखर्ची, नेत्र पीड़ा के साथ साथ मोक्ष एवं मृत्यु के पश्चात प्राणी की गति का भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

रामवाण : गिलोय

गिलोय एक ऐसी लता है जो भारत में सर्वत्र पैदा होती है। अमृत तुल्य उपयोगी होने के कारण इसे आयुर्वेद में अमृता नाम दिया गया है। नीम के पेड़ पर चढ़ी गिलोय औषधि के रूप में प्राप्त करने में बेहद प्रभावशाली है। इसका वैज्ञानिक नाम 'टीनोस्पोरा कार्डीफोलिया' है। इसे अंग्रेजी में गुलंच कहते हैं। कन्नड़ में अमरदवल्ली, गुजराती में गालो, मराठी में गुलबेल, तेलुगू में गोधुची, तिप्पिगा, फारसी में गिलाई, तमिल में शिन्दिल्कोदी आदि नामों से जाना जाता है। गिलोय में ग्लुकोसाइन, गिलो इन, गिलोइनिन, गिलोस्तेराल तथा बर्बेरिन नामक एल्केलाइड पाये जाते हैं। नीम पर चढ़ी हुई गिलोय उसी का गुण अवशोषित कर लेती है, इस कारण आयुर्वेद में वही गिलोय श्रेष्ठ मानी गई है जिसकी बेल नीम पर चढ़ी हुई हो।

एक कथा के अनुसार कि देव-दानवों के युद्ध में अमृत कलश की बूँदें जहाँ जहाँ पड़ीं, वहाँ वहाँ गिलोय उग गई। यह मैदानों, सड़कों के किनारे, जंगल, पार्क, बाग-बगीचों, पेड़ों-झाड़ियों और दीवारों पर लिपटी हुई दिख जाती है। इसकी बेल बड़ी तेजी से बढ़ती है। इसके पत्ते पान की तरह बड़े आकार के हरे रंग के होते हैं। गर्मी के मौसम में आने वाले इसके फूल छोटे गुच्छों में होते हैं और इसके फल मटर जैसे अण्डाकार, चिकने गुच्छों में लगते हैं जो बाद में पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं। गिलोय के बीज सफ़ेद रंग के होते हैं। जमीन या गमले में इसकी बेल का एक छोटा सा टुकड़ा लगाने पर भी यह उग जाती है और बड़ी तेज गति से स्वच्छन्द रूप से बढ़ती जाती है और जल्दी ही बहुत लम्बी हो जाती है। कुछ तीखे कड़वे स्वाद वाली गिलोय देशभर में पायी जाती है।

आयुर्वेद में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार्य चरक ने गिलोय को वात दोष हरने वाली श्रेष्ठ औषधि माना है। गिलोय रक्तशोधक, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली, ज्वर नाशक, खांसी मिटाने वाली प्राकृतिक औषधि है। टाइफाइड, मलेरिया, कालाजार, डेंगू, एलीफेंटीएसिस, विषम ज्वर, उल्टी, बेहोशी, कफ, पीलिया, धाते विकार, यकृत निष्क्रियता, तिल्ली बढ़ना, सिफलिस, एलर्जी सहित अन्य त्वचा विकार, झाइयां, झुर्रियां, कुष्ठ आदि में गिलोय का सेवन आश्चर्यजनक परिणाम देता है। यह शरीर में इंसुलिन उत्पादन क्षमता बढ़ाती है। रोगों से लड़ने, उन्हें मिटाने और रोगी में शक्ति के संचरण में यह अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती है।



यह प्राकृतिक 'कुनैन' है। इसका नियमित प्रयोग सभी प्रकार के बुखार, फ्लू, पेट कृमि, रक्त विकार, निम्न रक्तचाप, हृदय दौर्बल्य, क्षय रोग, मूत्र रोग, एलर्जी, उदर रोग, मधुमेह, चर्म रोग आदि अनेक व्याधियों से बचाता है। गिलोय भूख भी बढ़ाती है। इसकी तासीर गर्म होती है। काला ज्वर-गिलोय के ताजे रस में शहद या मिस्री मिलाकर दिन

में 3 बार देने से काला ज्वर में लाभ होता है। कब्ज को दूर करने में गिलोय का कोई जोड़ नहीं है। गिलोय का चूर्ण गुड़ के साथ सेवन करने से कब्ज में राहत मिलती है। मूत्र विकार में गिलोय का काढ़ा पेशाब संबंधी कष्ट को भी दूर करता है।

-सुप्रिया राय

त्याग एक बच्ची का

आज रुढ़की इंजीनियरिंग के प्री टेस्ट का परीक्षाफल आने वाला है। अमर के मन में अपने पास होने की बहुत आशा और विश्वास है। वह परीक्षा देकर ही संतुष्ट था कि अवश्य पास कर जाएगा। फिर भी एक तरफ जहां परीक्षा में पास होने की खबर आने की चिंता थी वहीं दूसरी तरफ वह यह भी सोचकर परेशान हो रहा था कि इस परीक्षा के पास भी कर जाने के बाद क्या वह इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर पाएगा?

अखबार थामते हुए उसके हाथ एकबार कांपे जरूर थे। पर सत्य से क्या घबड़ाना ? वह पास था। पहले हड़बड़ी में उसे अपना रोल नम्बर ही नहीं मिल रहा था लेकिन उसका नाम बहुत नीचे पास करने वालों में ही छपा था।

अपना रोल नम्बर देखकर उसे खुशी हुई कि कम से कम वह परीक्षा पास करने की क्षमता तो रखता है। ट्रेड को देखकर उसे थोड़ी निराशा भी हुई क्योंकि वह जिस ट्रेड में इंजीनियरिंग करना चाहता था, उस ट्रेड के लिए पास नहीं कर सका था। फिर भी वह अपनी खुशी का इजहार अपने बड़े भाई से करने जा पहुंचा।

बड़े भाई के पास पहुंच कर वह कुछ कहने की हालत में चुपचाप खड़ा हो गया। उसके बड़े भाई ने उसे भांप कर कहा-“क्या बात है अमर, कुछ कहना चाहते हो ?”

“हां भैया !”

“तो फिर बोलते क्यों नहीं ?”

“भाई साहब, हमें चार हजार रुपये चाहिए।”

“मगर इतने रुपयों का तुम करोगे क्या, क्या कोई खास काम है ?”

“हां, मैं रुढ़की इंजीनियरिंग की परीक्षा में पास कर गया हूं। उसमें एडमिशन कराने में चार हजार रुपये लगेंगे।”

“रुपये तुम्हें कब चाहिए ?”

“अगले सोमवार को। मैं उसी दिन रुढ़की जाऊंगा।” अमर ने कहा।

“तुम चिंता मत करो, रुपयों की व्यवस्था तो मैं कर ही दूंगा। हां यह तो खुशी की बात है कि हमारे खानदान का कोई लड़का इंजीनियरिंग में पढ़े।” अमर के बड़े भाई राघव ने बड़ी आत्मीयता से कहा।

हालांकि राघव शुरु से ही अमर के बहुत अधिक पढ़ने के खिलाफ थे। वह यह नहीं चाहते थे कि अमर कल इतना बड़ा बन जाए कि उसे रास्ते से हटाना मुश्किल हो जाए।

राघव स्वयं किसी सूता मिल में मैनेजर के पद पर काम करते थे। उनके परिवार में दो बेटे और एक बेटी थी। पत्नी राघव से भी तेज थी। उसका वश चलता तो वह अमर का टेंटुआ ही दबा देती ताकि सास-ससुर द्वारा छोड़ी गई सारी संपत्ति उसका और उसके बेटे का हो जाता। राघव और अमर में १८ साल की छोटाई-बड़ाई थी। अमर से बड़े तो उसके भतीजे थे। हां, उससे दो साल छोटी राघव की सबसे छोटी संतान उर्मिला थी।

मां-बाप के नक्से कदम पर चल रहे राघव के बेटे भी उसे फूटी आंखों से भी देखना नहीं चाहते थे। अमर इन बातों को समझता तो था पर करता भी तो क्या ? उस परिवार में यदि कोई उसका हमदर्द था तो वह थी उसकी भतीजी उर्मिला। उर्मिला को अमर के प्रति मां-बाप एवं भाइयों का ऐसा व्यवहार अच्छा कभी नहीं लगता था पर वह क्या कर सकती थी। उसके विरोध करने पर उसके दोनों भाई उसपर खफा हो जाया करते थे।

अमर की बातें सुनकर राघव के दिल पर सांप लोट गया और लोटता भी क्यों नहीं। कई बरस से उसके दोनों

बेटे मैट्रिक में ही फेल हो रहे थे। राघव अपने हाव-भाव से अमर को उस समय संतुष्ट करने में कामयाब हो गया था पर उसके हृदय में एक कुटिल खेल चालू हो गया था जिसका भान अमर को न हो सका।

थोड़ी देर पहले अमर के मन में जो संशय था कि इंजीनियरिंग की परीक्षा पास करने से क्या हुआ, आगे की पढ़ाई के लिए पैसे कहां से आएंगे, वह समाप्त हो गया था। उसकी इस सफलता से उर्मिला को काफी खुशी हुई। वह अपनी जेब खर्चे के पैसों से मिठाई खरीदकर लोगों में बांट आई। पर उसके भाइयों को यह अच्छा नहीं लगा और बड़े ने उसे दो-तीन थप्पड़ भी दे डाला।

पहले ही अपने बड़े भाई के पढ़ाई के विरोध में रहने के कारण वह कड़ियों को ट्यूशन पढ़ाया करता था। उसे याद नहीं था कि उसकी भाभी ने कभी स्कूल जाते समय टिफिन भी बनाकर दिया था। उसे यह कभी नहीं भूलता कि जब वह छोटा था, एक दिन पढ़ने जाते वक्त भाभी से टिफिन देने के लिए कहा तो उन्होंने बस मारा ही नहीं लेकिन एक भी गाली ऐसी नहीं थी जो उन्होंने देने में कोताही की।

स्कूल से लौटकर शाम को जब घर आया तो भैया से भाभी के टिफिन न देने की शिकायत करने लगा। सोचा था भैया भाभी को उनकी गलतियों को सुधारने को कहेंगे। लेकिन यह क्या? भैया के चार झन्नाटेदार तमाचे वह सह नहीं सका और नीचे गिर पड़ा था। भैया गुस्से में उबल रहे थे और बोले जा रहे थे-“बेहूदा, नालायक कहीं का। भाभी मां के समान होती है और तू भाभी की शिकायत करता है। तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तू अपनी भाभी को ही गाली दे। अरे !तू मर भी क्यों नहीं जाता...”

उसे अपने बाप का चेहरा तो याद नहीं था पर मां को मरे अभी छः महीने भी नहीं हुए थे। जबतक मां थी उसे न राघव की चिंता थी न भाभी की। पर मां के आंखें मूंदते ही भैया और भाभी की नजरें उलट गईं। उस दिन वह बहुत रोया था। पर उसका रोना तो पानी में लड़ु मारना था। तब से वह राघव से बहुत डरा करता था।

आज पता नहीं क्यों उसे पुरानी बातें ही याद आ रही थीं। वह चाहकर भी अपने को नहीं रोक पा रहा था। उसे अपने बचपन की एक ऐसी घटना याद आने लगी थी जिसे सोचने के साथ ही आंखें भर आईं।

उसे याद आ रहा था। दुर्गापूजा का समय था। दुर्गापूजा का मेला वहां से कुछ दूर दुर्गा मंदिर के पास लगा करता था। वह भी दोनों भतीजों के साथ मेला देखने जाने के लिए कहा। बड़े भैया ने उसे दो अठन्नियां दी थीं। वहीं उन्होंने अपने बेटों को दो-दो रुपए दिए थे। लेकिन वह भयवश कोई जिद नहीं कर सका था। फिर भी वह बहुत खुश था कि भैया ने उसे भी मेला घूमने के लिए दो अठन्नियां दी हैं।

उसे जिलेबियां खाने का बड़ा शौक था। जिलेबियां देखकर वह अपने को नहीं रोक पाता था। मां के सामने जब वह कोई जिद करता जो पूरी नहीं होने वाली होती तो उसकी मां उसके लिए जिलेबियां मंगवा दिया करती थी जिससे उसका गुस्सा काफूर हो जाया करता था। बचपन के भोलेपन में कभी उसे इस बात का अहसास नहीं हो सका कि मां उसके लिए कहां से जिलेबियां मंगवाती थी। पर अब जिलेबियां तो दूर का सपना थीं।

आज मेले में पहुंचते ही हलवाई की दुकान पर सजी जिलेबियां देखकर जिलेबियों के स्वाद ने उसके मुंह में पानी भर दिया। उसने सोचा मेला तो बाद में घूम लूंगा, बहुत दिन हो गए चलो पहले जिलेबियां ही खा लेते हैं।

वह जितनी जिलेबियां खा सकता था वह पच्चीस पैसे में ही मिल जाती लेकिन चूंकि वह बहुत दिनों जिलेबियां नहीं खाया था इस लिए सोचा क्यों एक अठन्नी की जिलेबियां खरीद ले। वह पचास पैसे की जिलेबी खरीदकर फटाफट खाने लगा। थोड़े ही देर में उसका पेट भर गया। अब और अधिक खाने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी।

जिलेबियां अब भी ज्यादा बची थीं। उसने बची हुई जिलेबियों को वहां ललचते कुत्तों को गर्व से फेंक दिया और हाथ मुंह धोने के लिए नल पर जा पहुंचा। जब हाथ मुंह धोकर वापस आया तो दुकानदार अपनी जेब से एक अठन्नी निकालकर देने लगा। दुकानदार के हाथ में अठन्नी जाते ही उसे कुछ शक हुआ। उसने अठन्नी को हाथ पर रगड़कर देखा तो वह खोटी थी। अब तो दुकानदार ने गरम होकर डांटा- “ऐ लड़के ! खोटा सिक्का देता है?”

हड़बड़ाकर वह अपनी जेब से दूसरी अठन्नी निकाला और दुकानदार को दिखाया। दुकानदार को उसपर शक हो गया था इसलिए उसने उसे भी रगड़कर देखा तो वह भी खोटी ही थी। अब तो दुकानदार को काफी गुस्सा चढ़ आया। वह जलेबी तौलना छोड़कर दुकान से नीचे उतर आया और उसका गला पकड़कर दो झापड़ दिया। एक भट्टी सी गाली देते हुए कहा-“बीते भर का छोकरा, आज से ही ठगी करता है। तूने आठ आने की जलेबी खाई है तुझे मैं छोड़ूंगा नहीं। तेरे जैसे लुच्चे को उसके लिए सजा देता हूं। चल आज शाम तक जलेबियों के दाम के बदले लोगों के जूठे बरतन साफ कर। साला अभी से ठगी सीखता है।”

वह दिनभर बरतन धोया। मेला घूमना तो दूर, उसे लोगों द्वारा खाए जूठे बरतन को साफ करने में पूरा दिन बीत गया। संयोग से उसी दुकान पर जिलेबी खाने उसके भतीजे भी आए और उसे बरतन साफ करते देखकर चुपचाप घर जाकर मां बाप से शिकायत कर बैठे।

दिनभर बरतन साफ करने से थकान तो थी ही ऊपर से भैया ने भी यह कहते हुए खूब पीटा। वे उसे मारते जाते थे और कहते जाते थे- “तू जूठे बरतन मलता है ताकि हमलोगों की नाक कट जाए। लोग कहें कि हमलोग भाई को मजदूरी कराते हैं। नन्हा सा दिल भला क्या सफाई देता। एक दिन भर जूठे बरतन मांजने दूसरे मार की वजह से उसका पूरा शरीर टूट रहा था। बिना खाये पिए ही सो गया।

पढ़ने में वह शुरु से ही तेज था। सरकारी स्कूल में फीस तो लगनी नहीं थीं और किताबें स्कूल से ही मिली थीं सो हाईस्कूल तक पढ़ने में कोई असुविधा नहीं हुई थी। इंटर में तो उसे स्कालरशीप मिल रही थी। भैया- भाभी से पैसे मांगने की जरूरत नहीं थी।

दूसरे दिन राघव ने ही अमर से पूछा- “तुम्हें कब जाना है ?”

“सोमवार की गाड़ी से।”

“ठीक है, मैं शनिवार को बैंक से पैसे निकालकर लाऊंगा और कुछ ज्यादा पैसे भी दे दूंगा ताकि तुम्हारे राह खर्च के लिए भी हो जाएंगे।”

“बहुत अच्छा भैया!” अमर खुशी में कह गया।

उर्मिला शुक्रवार को ही अमर को याद दिलाती हुई बोली-“चाचा तुम आज ही पापा से कहो कि पैसे निकाल लें। कल कहीं बैंक...।”

“अरे छोड़ो, भैया ने कह दिया है सो वह खुद ही कल पैसे लेकर आएंगे।” अमर ने आवस्त ढंग से कहा।

उर्मिला और आगे कुछ कहना ठीक न जानकर चुप हो गई।

रविवार की शाम को उर्मिला अमर को बहुत व्यग्रता से खोज रही थी। पर उस दिन अमर काफी रात को अपने दोस्तों से मिलकर लौटा। उर्मिला चाहकर भी अमर से कोई बात नहीं कर सकी।

पर उसको अपने मां-बाप से घृणा हो आई थी। पूरी रात वह करवटें बदलते रह गई पर उसे नींद नहीं आई।

सुबह उठकर अमर जब तैयार हो रहा था। घर में भाभी कुछ तल रही थीं। रास्ते में खाने के लिए अमर को देना था। पर भैया कहीं नजर नहीं आ रहे थे।

अमर ने भाभी से पूछा-“भाभी, भैया कहां चले गये हैं ? मुझे देर हो रही है। तीन घंटे के बाद तो ट्रेन भी नहीं मिलेगी। आज आखिरी दिन है। अगर एडमिशन नहीं हुआ तो...।”

कहीं पैसों का इंतजाम करने ही गए हैं। आते ही होंगे। हमने तुम्हारे रास्ते के लिए टिफिन बना दिया है।”

अमर और क्या बोलता औंधे मुँह लेट गया। उसे ख्याल आया कि उर्मिला भी आज सुबह सुबह जाने कहां चली गई है अबतक नजर नहीं आ रही है। तभी उर्मिला ने प्रवेश किया। गाड़ी छूटने में आधा घंटा और बचा था।

“अमर चाचा !तुम मेरे इन सोने के दोनों कंगनों को रख लो और ये पकड़ो पांच सौ रुपए। जल्दी जाओ

कहीं ट्रेन नहीं छूट जाए।”

उर्मिला धीरे-धीरे कहती हुई अपने दुपट्टे से कंगन निकालकर अमर को थमाते हुए बोली।

“क्यों ? तुम्हारे इन कंगनों को मैं क्यों बेचूंगा ? तुम्हें ऐसा करने की क्या जरूरत पड़ गई ?” अमर आश्चर्य में बोला।

“तुम नहीं समझोगे। मैंने मम्मी से पापा को कहते हुए सुना है कि बड़ा चला है पढ़ने वाला, इंजीनियर बनेगा। मैं उसे पैसा दूंगा तब न आज वह जाएगा। आज ही लास्ट दिन है और छूट जाने से उसका एडमिशन नहीं हो पाएगा।”

“मम्मी ने पूछा था आप उसे यह पहले भी तो बता सकते थे कि उसे पढ़ने के लिए पैसे नहीं देंगे। तब पापा ने कहा था कि तुम नहीं समझोगी। मैंने उससे झूठ कहकर इसलिए फंसाया कि यदि यह कह देता कि पैसे नहीं दूंगा तो वह कहीं अपने हिस्से की जमीन बेचकर चला जाता। गांव के लोग ऐसे वक्त का हमेशा फायदा उठाते हैं*।

“देखो, अभी मैं कहीं चला जाता हूं। तुम तब तक उसके लिए रास्ते के लिए खाना बनाना शुरू कर दो ताकि उसे किसी बात का संदेह नहीं हो सके। ट्रेन का समय बीत जाने के बाद ही मैं आऊंगा। मैं इससे आगे नहीं सुन सकी। मुझे तो ऐसे मां बाप को मां बाप कहने से घिन आती है।”

“पर तुम्हें ऐसा करने की क्या जरूरत है? कहीं तुम्हारे मां बाप जानेंगे तो? तुम्हारे हाथों में हमेशा कंगन होने ही चाहिए यही तो कहा संन्यासी महाराज ने। तुम उन्हीं कंगनों को बेचने के लिए कह रही हो।” अमर ने आशंकित होकर कहा।

पिछले साल आए हुए एक संन्यासी महाराज से कहा था कि उसके हाथों में हमेशा सोने के कंगन पड़े होना चाहिए नहीं तो मृत्यु भी हो सकती है। उर्मिला के पापा ने दीपावली के अवसर पर पांच हजार के सोने के कंगन उसे बनवाकर दिए थे। अमर को एक एक बात याद आ रही थी।

“मेरी सहेली ने मेरे हाथों में सोने के कंगन देखकर मेरी बराबरी करने के लिए जिद करके अपने मां बाप से अपने लिए ठीक ऐसे ही कंगन रोल्ड गोल्ड के दो सौ रुपये में बनवाए हैं। मैंने उसे सारी बातें बताकर उससे वे कंगन मांग लाई हूं। “मैंने उन्हें पहन लिया है ताकि तुम्हारे जाने के बाद किसी को कोई शक न हो। सोने के कंगन बेचकर तुम अपना एडमिशन करा लो। 500 रुपये हमने बचाकर रखे थे अपनी जेब खर्च के लिए, रख लो।” कहते हुए उर्मिला लगभग रो पड़ी थी।

“पर उर्मि...।”

“पर...तर...नहीं, तुम जल्दी निकलो चाचा, तुम्हें मेरी कसम है।”

अमर हतप्रभ सा बैग उठाया और कमरे से बाहर आ गया। उर्मिला तबतक अपनी माँ के पास जाकर खड़ी हो गई थी।

अमर का दिल तो अपनी छोटी भतीजी के पांव छूने का कर रहा था। पर नैतिकता के चलते उसने भाभी के कदमों की तरफ हाथ बढ़ाया।

“तुम अपने भैया से नहीं मिलोगे ? बिना पैसे के जाकर तुम वहां क्या करोगे ?”

“यह तो पता नहीं, पर अभी रुकने से ट्रेन ही छूट जाएगी।” कहते हुए आगे बढ़ गया।

भाभी की आंखों में जहां शैतानी चमक थी वहीं उसके देवर की आँखें गीली हो रही थीं अपने से छोटी अपनी भतीजी के त्याग पर जो अपने मृत्यु को भी किसी की खुशियों के लिए आसानी से गले लगा सकती है।

— प्रियंका पाण्डेय

मेघालय का शिलांग

शिलांग भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य मेघालय की राजधानी है। भारत के पूर्वोत्तर में बसा शिलांग हमेशा से पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। इसे भारत के पूरब का स्कॉटलैण्ड भी कहा जाता है। पहाड़ियों पर बसा छोटा और खूबसूरत शहर पहले असम की राजधानी था। असम के विभाजन के बाद मेघालय बना और शिलांग वहां की राजधानी। लगभग डेढ़ हजार मीटर से अधिक की ऊंचाई पर बसे इस शहर में मौसम हमेशा सुहावना बना रहता है।

मानसून के दौरान जब यहां बारिश होती है, तो पूरे शहर की खूबसूरती और निखर जाती है और शिलांग के चारों तरफ के झरने जीवंत हो उठते हैं। यहां सुन्दर वादियां, बादलों से ढंके पहाड़, हरे भरे जंगल और शहर के चारों तरफ कई खूबसूरत झरने हैं जो बारिश के मौसम में इस शहर की खूबसूरती को और बढ़ा देते हैं लेकिन यहां काफी भीड़भाड़ भी रहती है जिसका मुख्य कारण यहां पर दिन ब दिन बढ़ते जा रहे वाहन हैं और जिस कारण प्रदूषण भी बहुत है यहां। शिलांग में स्पोर्ट्स एक्टिविटी, फिशिंग और हाईकिंग की सुविधायें भी उपलब्ध हैं।

बहुत पहले शिलांग एक छोटा-सा गांव था जो खासी और जन्तिया पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यह बंगाल और असम की गर्मी के दिनों में राजधानी हुआ करती थी। शिलांग मेघालय राज्य की राजधानी होने से पहले असम की राजधानी हुआ करता था फिर 1972 में असम राज्य के विभाजन के बाद मेघालय की स्थापना हुई और शिलांग को मेघालय की राजधानी घोषित किया गया। अंग्रेजों के शासन काल में ये शहर उनका महत्वपूर्ण प्रशासनिक केन्द्र हुआ करता था।

शिलांग में मुख्य रूप से तीन जातियां पाई जाती हैं खासी, जयन्ति और गारो। लेकिन ज्यादातर आबादी खासी जनजाति की ही है जो की भारत की सबसे पुरानी जनजातियों में से एक मानी जाती है, इस जनजाति के ज्यादातर लोग ईसाई धर्म को मानने वाले हैं। खासी जनजाति के बारे में दिलचस्प बात यह है कि इस जनजाति में महिला को घर का मुखिया माना जाता है। जबकि भारत के अधिकांश परिवारों में पुरुष को प्रमुख माना जाता है।

इस जनजाति में परिवार की सबसे बड़ी लड़की को जमीन जायदाद की मालकिन बनाया जाता है। यहां मां का उपनाम ही बच्चे अपने नाम के आगे लगाते हैं। इस जाति की यह खास बात है कि यहां घर की महिला घर की मुखिया होती है तथा घर के और संपत्ति से जुड़े सारे फैसले वे ही लेती है तथा दूसरी खास बात यहां शादी के बाद दूल्हा दुल्हन के घर जाकर रहता है और वंश भी महिला के नाम से ही चलता है।

इन जनजातियों में ईसाई धर्म का खासा प्रभाव देखने को मिलता है। 1897 में आए भूकंप ने इस शहर को पूरी तरह तबाह कर इसे बिल्कुल नए ढंग से निर्मित करने के लिए विवश कर दिया। इस क्षेत्र के अरुणाचल प्रदेश के केंद्र शासित प्रदेश बनने तक नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी नेफ्रा का मुख्यालय शिलांग में ही था। 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में यहाँ पैदल यात्रा ही आवागमन का एक मात्र जरिया था।

अत्यधिक ऊँचाई पर बसे होने के कारण इसे 'दक्षिण का स्कॉटलैंड' कहा जाता है। शिलांग का नाम शिल्लोग देवता के नाम पर पड़ा है। ऐसा माना जाता है कि इस नगर के ऊपर शिल्लोंग चोटी पर इस देवता का निवास है। नवम्बर, 1823 में इस नगर पर ईस्ट इंडिया कम्पनी का कब्जा हो गया। शिलांग पर सियेमों से पूर्व अहोम राजाओं का शासन था। मेघालय बनने तक यह शिलांग असम राज्य की राजधानी बना रहा।

— ऋचा सिंह

मोबाइल और उसका प्रोसेसर

आजकल मोबाइल फोन हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है। फोन का कार्य निष्पादन शानदार हो इसके लिए जरूरी है कि मेमोरी के अलावा फोन में ताकतवर प्रोसेसर हो। कौन सा प्रोसेसर बेहतर है और कौन सा नहीं इस बारे में जानना भी बहुत जरूरी है। प्रोसेसर की जानकारी होगी तभी कोई अच्छे फोन की खरीदारी कर सकेगा। मोबाइल फोन के उपयोग के दौरान जो भी कमांड फोन को मिलता है उस पर प्रोसेसर ही अमल करता है। साधारण शब्दों में कहें तो प्रोसेसर मोबाइल फोन का दिमाग होता है। फोन में प्रोसेसर जितना तीव्र होगा, उतनी ही तेज गति से मल्टीटास्किंग, गेमिंग, फोटो और वीडियो आदि कार्य करेंगे। इसे वैज्ञानिक भाषा में सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट यानी सीपीयू कहते हैं, जो एक इलेक्ट्रॉनिक सर्किट होता है। प्रोसेसर का कार्य निष्पादन हर्ट्ज, किलोहर्ट्ज, मेगाहर्ट्ज और गीगाहर्ट्ज के स्केल पर नापे जाते हैं।

स्मार्टफोन के शुरुआती दौर में 400 मेगाहर्ट्ज और 500 मेगाहर्ट्ज तक के प्रोसेसरों का उपयोग किया गया। 800 मेगाहर्ट्ज वाले स्मार्टफोन को बहुत अच्छे कहे जाते थे। आज भी कम रेंज के स्मार्टफोन में 700-800 मेगाहर्ट्ज तक के प्रोसेसर का उपयोग किया जा रहा है। परंतु मोबाइल प्रोसेसर क्षेत्र में नया बदलाव तब आया जब क्वालकाम ने पहली बार मोबाइल के लिए 1 गीगाहर्ट्ज प्रोसेसर को पेश किया। वर्ष 2009 में तोशिबा टीजी 01 में इस प्रोसेसर का उपयोग किया गया था।

जिस फोन में जितना ताकतवर प्रोसेसर था वह उतना एडवांस गिना जाने लगा। मेगाहर्ट्ज गीगाहर्ट्ज से छोटी ईकाई है। एक मेगाहर्ट्ज प्रति सेकंड एक लाख फ्रीक्वेंसी का प्रतिनिधित्व करता है। माइक्रोप्रोसेसरों की इस गति को क्लॉक स्पीड भी कहा जाता है जिसे मेगाहर्ट्ज में मापा जाता है। जहां शुरुआत में स्मार्टफोन में 400 मेगाहर्ट्ज और 500 मेगाहर्ट्ज तक के प्रोसेसर उपयोग किए जाते थे वहीं अब गीगाहर्ट्ज वाले स्मार्टफोन भी बाजार में उपलब्ध हैं। जहां शुरुआत में केवल एक या दो कोर प्रोसेसर वाले स्मार्टफोन ही बाजार उपलब्ध थे। वहीं अब आठ कोर वाले प्रोसेसर भी बाजार में उपलब्ध हैं। जैसे प्रोसेसर की संख्या में बढ़ोतरी होती गई वैसे ही फोन में परफॉर्मंस भी तीव्रतर होती गई।

प्रोसेसरों का वर्गीकरण

सिंगल कोर प्रोसेसर- सिंगल कोर प्रोसेसर में एक ही प्रोसेसिंग यूनिट होती है। एक ही प्रोसेसिंग यूनिट होने की वजह से डाटा का हस्तांतरण बहुत हद तक सीमित हो जाता है। जहां मल्टीटास्किंग के दौरान थोड़ी समस्या होती है। प्रोसेसिंग क्षमता धीमी हो जाती है और फोन स्लो काम करने लगता है।

डुअल कोर प्रोसेसर- डुअल कोर प्रोसेसर में कोर यूनिट दो होते हैं। कोर यूनिट दो होने से डिवाइस कार्यों को दो बराबर भागों में बांट देता है। इससे मल्टीटास्किंग आसान हो जाती है। फोन साधारण एप्लिकेशन का उपयोग करने वालों के लिए डुअल कोर प्रोसेसर वाले फोन आपके लिए बेहतर हैं। इसमें इंटरनेट के साथ कुछ एप्लिकेशन भी ओपन किया जा सकता है। ज्यादा डाटा अपलोड और डाउनलोड के लिए यह बेहतर नहीं कहा जा सकता।



क्वाडकोर प्रोसेसर- डुअल कोर की अपेक्षा इसमें दो अतिरिक्त कोर होते हैं जो डाटा हस्तांतरण को बेहतर बनाते हैं। अब जहां एक नहीं, दो नहीं बल्कि चार कोर हैं। इसमें मल्टीटास्किंग और बेहतर हो जाती है। एक साथ ढेर सारे एप्लिकेशन ओपेन किया जा सकते हैं और गेमिंग का मजा भी दोगुना हो जाता है। इसमें अच्छे ग्राफिक्स वाले गेम रन कर सकते हैं। वहीं हाल में क्वालकॉम द्वारा प्रदर्शित स्नैपड्रैगन 820 क्वाडकोर प्रोसेसर पर आधारित है जिसे नई कोरयो प्रोसेसर तकनीक से लैस किया गया है।

हेक्सा कोर- छह कोर वाले प्रोसेसर— ऐसे प्रोसेसर में छह कोर होते हैं। यह पिछले दोनों प्रोसेसर के मुकाबले और भी तीव्र गति से कार्य करता है। इस प्रोसेसर पर मल्टीटास्किंग के दौरान फोन हेंग कम होगा और आप उच्च ग्राफिक्स वाले गेम का भी मजा ले सकते हैं। सबसे पहले सैमसंग ने हेक्सा कोर प्रोसेसर के साथ गैलेक्सी नोट 3 नियो को बाजार में उतारा था।

आक्टाकोर प्रोसेसर- यह आज के जमाने का प्रोसेसर है जो फोन को बेहद ही स्मार्ट बनाता है। आक्टाकोर प्रोसेसर में आठ कोर होते हैं। डाटा डाउनलोड-अपलोड के अलवा वीडियो डाउनलोडिंग और स्ट्रीमिंग के लिए यह प्रोसेसर खास कहा जा सकता है। वहीं इसमें मल्टीटास्किंग और गेमिंग का भी अनुभव शानदार होता है। इसे बेहतर बैकअप के लिए भी जाना जाता है। आज के समय का सबसे प्रचलित प्रोसेसर यही है और यदि आपके फोन में यह प्रोसेसर लगा हुआ है तो समझिए कि आपका फोन सचमुच स्मार्ट फोन है।

चिपसेट

मोबाइल पर जब से मल्टीटास्किंग संभव हुआ है तब से यह डिवाइस और भी ज्यादा उपयोगी हो गया है। अर्थात् आप गाने सुन रहे हैं और मेल भी सर्फ कर रहे हैं या वीडियो देखते हुए भी ब्राउजिंग या चैटिंग से जुड़े हुए हैं। परंतु अक्सर मल्टीटास्किंग के समय फोन हेंग हो जाता है। इसका एक कारण प्रोसेसर के साथ ही फोन में चिपसेट भी हो सकता है। यह भी प्रोसेसर की भांति ही महत्वपूर्ण होता है। फोन को कार्य करने के लिए चिपसेट ही जिम्मेदार होता है। आइए जानते हैं कुछ चिपसेट निर्माता कंपनी और उसके कार्य निष्पादन के बारे में। क्वालकॉम स्नैपड्रैगन 615 और स्नैपड्रैगन 617 आदि आक्टाकोर चिपसेट हैं। वहीं मीडिया टेक हेलियो पी10 भी बेहतर आक्टाकोर प्रोसेसर वाला चिपसेट जाना जाता है। वहीं आक्टाकोर प्रोसेसर के साथ सैमसंग का एक्सनोस 8890 चिपसेट भी बेहद ताकतवर है।

क्वालकॉम

क्वालकॉम एक अमेरिकी कंपनी है जो क्वालकॉम स्नैपड्रैगन नाम से मोबाइल का चिपसेट बनाती है। बाजार में कंपनी अब तक 200, 400, 600 और 800 सीरीज में स्नैपड्रैगन चिपसेट पेश कर चुकी है। हाल में क्वालकॉम ने 820 चिपसेट पेश किया है जिसे फिलहाल विश्व का सबसे ताकतवर प्रोसेसर वाला चिपसेट कहा जा रहा है।

इंटेल

इंटेल विशेष तौर से कंप्यूटर के लिए चिपसेट निर्माण के लिए जानी जाती है लेकिन पिछले कुछ सालों में कंपनी ने स्मार्टफोन में भी दस्तक दिया है। इंटेल द्वारा स्मार्टफोन के लिए निर्मित एटॉम चिपसेट में कंपनी एटॉम एक्स3, एटॉम एक्स5 और एटॉम एक्स7 बाजार में उतार चुकी है। असूस, जोलो और लेनोवो के फोन में इंटेल एटॉम चिपसेट देखने के मिला है। चिपसेट निर्माता कंपनी एनवीडिया टेग्रा नाम से चिपसेट का निर्माण करती है। बेहतर परफॉर्मेंस देने में एनवीडिया टेग्रा चिपसेट सक्षम है। यह पीसी के अलावा गेमिंग कंसोल और मोबाइल डिवाइस में उपयोग होता है।

—विकास कुमार

कोलकाता का हाथ रिक्शा

कोलकाता को सिटी आफ ज्वाय कहा जाता है अर्थात ऐसा शहर जहां मौज मस्ती की कोई कमी नहीं पर इसी मस्ती भरे शहर का एक ऐसा पक्ष भी है जो आज के प्रगतिशील भारत को ठेंगा दिखाता प्रतीत होता है। कोलकाता का हाथ रिक्सा ऐसा रिक्शा है जो सिर्फ कोलकाता में ही चलता है। इसमें बैलगाड़ी की तरह पहिए होते हैं और उसे लेकर एक इंसान दौड़ता है। एक प्रकार से यह एक घोड़ा गाड़ी या बग्घी जैसा है। जिसमें घोड़े की जगह एक इंसान जुतता है।

आज भी ऐसे रिक्से कोलकाता की तंग गलियों और संकरे रास्तों में परिवहन का महत्वपूर्ण साधन बने हुए हैं पर कोलकाता में दो इंसान को लेकर दौड़ने वाले इस रिक्शा को हटाने की कयावद कई बार हुई लेकिन इसे अंजाम नहीं दिया जा सका है। जब कहीं ऐसे रिक्से की तस्वीर दिखाई देती है तो ये जेहन में तुरंत कौंध जाता है कि ये कोलकाता ही है। पूरे विश्व में शायद इस तरह का रिक्शा कहीं और दिखायी नहीं देता हो।

विमल मित्र की ख्याति प्राप्त फिल्म 'दो बीघा जमीन' में बलराज साहनी ने उस किसान शंभू महतो की भूमिका निभाई है, जिसे अपनी जमीन छुड़ाने के लिए इस रिक्से को खींचने के लिए मजबूर होना पड़ता है। हाथ रिक्से के माध्यम से सामंतवादी प्रथा का बखूबी चित्रण इस फिल्म के माध्यम से किया गया है। कोलकाता में ऐसे ही कई 'शंभू महतो' आज भी हैं जो कभी अपनी जीविका तो कभी किसी मजबूरी की वजह से इन रिक्शों को खींच रहे हैं। इस रिक्से को सड़क पर दौड़ता देख अंग्रेजी शासन की याद आती है। क्या विडंबना है कि आज भी इंसान इंसान को पेट की खातिर हाथ से रिक्सा खींचता है।

कोलकाता के मशहूर हाथ रिक्से की शुरुआत कहां से हुई, इस स्पष्ट नहीं है। इन रिक्से की समानता पालकी से की जा सकती हैं। पालकी पर शाही घरानों की महिलाएं सफर किया करती थीं। उन रास्तों से इन पालकियों को अपने कंधों पर रखकर प्रवासी मजदूर बड़ी मुश्किलों से उनकी मंजिल तक पहुंचाते थे। पालकी हाथ रिक्शा के रूप में कोलकाता की गलियों तक आ पहुंची।

शाही परिवार की सवारी रहा हाथ रिक्शा ब्रिटिशराज में अफसरों की पत्नियों यानी मेमसाहबों की सवारी बन गया था। वह रोज शाम को इन रिक्शों पर सैर के लिए निकलती थीं। हाथ रिक्शा ने धीरे-धीरे तरक्की की और फिर इसे एक ऐसे ठेले में तब्दील कर दिया गया जिसे खींचने की जिम्मेदारी एक बेबस और लाचार इंसान के हाथों पर होती थी। धीरे-धीरे हाथ से खींची जाने वाली यह गाड़ी कोलकाता के जर्मींदार और उच्च वर्गों के बीच लोकप्रिय होती गई और दूसरों को आराम पहुंचाने के लिए मजबूर मजदूर इसे खींचने के लिए तैयार होता गया। एक धरोहर के अलावा कोलकाता के हाथ रिक्से अब सामंतवादी प्रथा का एक अमानवीय चेहरा भी बन गए हैं। यह रिक्से आधुनिकता की ओर बढ़ते कोलकाता शहर के लिए किसी धब्बे से कम नहीं हैं।

वर्ष 1971 में युद्ध के माहौल के बीच कोलकाता के इन हाथ रिक्शों को बांग्लादेश से आये प्रवासीयों ने अपनी गुजर-बसर व पैसे कमाने के माध्यम के तौर पर चुना। उस दौर में रिक्से के सामान्य किराये की वजह से रिक्शों का शहर में एक अलग दबदबा था। दूसरी ओर शहर में मौजूद परिवहन के दूसरे माध्यम भी अपनी लोकप्रियता हासिल कर रहे थे।



जल वृक्ष

जल है तो कल है
यह अनमोल है
इसे बचा के रखिए,
बर्बाद मत कीजिये

जीवन तरसता पानी को यहां
पानी ही तो दौलत है
पानी सा धन भला कहा
जल है तो कल है यह अनमोल है

सीमित है यह जल का स्रोत
नष्ट न होने पाये यह जोत
इसी में है मानव की समृद्धि निहित
जल है तो कल है यह अनमोल है

चलों बचायें पानी आज
जल है धरती का ताज
जल है गुणों की खान
इसलिए है धरती की शान

अगर न बचा पाये इसे
वो दिन जल्द ही आएगा
जब धरा पे हर इंसान
बस 'पानी को चिल्लाएगा

कितनी दौलत कितना पैसा
काम कुछ न आ पायेगा
इसी तरह इंसान अगर
जल को बर्बाद करता जाएगा

आने वाली पीढ़ियों का
अब तो हम रखें ख्याल
जल के बिना भविष्य नहीं है
कैसे रहे मानव खुशहाल



वृक्ष हूँ मैं, झाड़ू हूँ मैं,
प्रकृति का अनुपम प्यार हूँ मैं.
थोड़ी धूप, थोड़ी वर्षा,
मेरा मन इतने से भरता

कौन सा धन किसका हूँ मैं,
जीवन सबको देता हूँ मैं.
पलाश हूँ मैं, बेर हूँ मैं,
तुलसी हूँ मैं, नीम हूँ मैं

हकीम हूँ मैं, देवो को प्रिय हूँ मैं,
खुशबू हूँ मैं, छांव हूँ मैं,
भरा-पूरा एक गाँव हूँ मैं
धरती का श्रंगार हूँ मैं

और कितना मुझे बर्बाद करोगे ?
अपने कुकर्मों से मन शांत करोगे
भूल गए हो क्या तुम भी ?
धरती पर प्राणवायु हूँ मैं

—विनय कुमार झा

मालदा मंडल में कार्यरत रेलकर्मी की पुत्री का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शानदार डांस प्रस्तुति

पूर्व रेलवे के मालदा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में तैनात श्रीमती फाल्गुनी कर्मकार, पति जयंतो कर्मकार कार्यालय अधीक्षक, वरिष्ठ बिजली इंजीनियर कार्यालय/ पूर्व रेलवे/मालदा की पुत्री जयिता कर्मकार जिसकी उम्र मात्र 13 साल ही है ने अंतराष्ट्रीय स्तर पर डांस प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कर मंडल को सम्मान दिलाया है। उसने आल इंडिया क्लासिकल डांस प्रोग्राम पुने में द्वितीय स्थान प्राप्त कर माता पिता को गौरवान्वित किया। उसकी उपलब्धियां लेकिन यही समाप्त नहीं हुईं वरन उसने इंटरनेशनल क्लासिकल डांस प्रोग्राम में भाग लेकर तृतीय स्थान प्राप्त कर देश को भी गौरवान्वित किया। जयिता शुरू से ही पढ़ने में तेज है तथा नृत्य उसकी रग रग में बसा है। जयिता नार्थ प्वाइंट इंगलिश एकेडमी में कक्षा 9 में पढ़ती है। भविष्य में वह शिक्षक बनना चाहती है क्योंकि उसका मानना है कि वह शिक्षक बन कर समाज की बेहतर सेवा कर सकती है।

हम उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।



मालदा मंडल के मुंगेर में स्थित शक्तिपीठ चंडिका स्थान



बिहार के मुंगेर जिला मुख्यालय से करीब चार किलोमीटर दूर भारत के 52 शक्तिपीठों में से एक है मां चंडिका स्थान। कहा जाता है कि यहां पूजा करने वालों की आंखों की पीड़ा दूर होती है। यह मंदिर पवित्र गंगा के किनारे स्थित है और इसके पूर्व और पश्चिम में श्मशान स्थल है। इस कारण 'चंडिका स्थान' को 'श्मशान चंडी' के रूप में भी जाना जाता है। चंडिका स्थान एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ है। नवरात्र के दौरान यहां भव्य मेला लगता है। अष्टमी के दिन यहां विशेष पूजा होती है। इस दिन माता का भव्य श्रृंगार किया जाता है। मंदिर से जुड़ी कई कहानियां काफी प्रसिद्ध हैं। मान्यता है कि राजा दक्ष की पुत्री सती के जलते हुए शरीर को लेकर जब भगवान शिव भ्रमण कर रहे थे, तब सती की बाईं आंख यहां गिरी थी। इस कारण यह 52 शक्तिपीठों में एक शक्तिशाली सिद्धपीठ माना जाता है।

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति मालदा की बैठक व 'बढ़ते कदम' के नवीनतम अंक के विमोचन के कुछ दृश्य

